पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 01.04.2023 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जन्मोत्सव

बुधवार 26 अप्रैल 2023,
दोपहर 3 से 6.00 बजे तक
आर्य समाज गांधी नगर, गाजियाबाद
आप सादर आमंत्रित है
—प्रवीन आर्य,संयोजक

वर्ष-39 अंक-21 चैत्र-2080 दयानन्दाब्द 200 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2023 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.04.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

92वें बलिदान दिवस पर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

बलिदानी राष्ट्र की नींव के पत्थर होते हैं —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार 23 मार्च 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान दिवस पर आर्य समाज सरस्वती विहार (पीतमपुरा) दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली के कौने कौने से सैकड़ों आर्य समाजियों ने पहुॅच कर श्रद्धांजलि अर्पित की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि शहीद राष्ट्र की अमानत हैं उनके बलिदान पर ही राष्ट्र की नींव खड़ी होती है। नयी पीढ़ी को उनके बलिदान के बारे में बताने की आवश्यकता है जिससे वह राष्ट्र भक्ति की भावना से ओतप्रोत हो इसलिये पाठ्यक्रम में उनके बारे में जानकारी देनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे हज़ारों नौजवान उनकी प्रेरणा से आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। निगम पार्षद शिखा भारद्वाज व भाजपा नेता नीरज गुप्ता ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सुप्रसिद्ध गायक नरेंद्र आर्य सुमन व पिंकी आर्य के देश भक्ति गीतों पर लोग झूम उठे।युवा नेता संजीव महाजन ने कहा कि आर्य समाज युवा शक्ति को प्रेरित करने का प्रयास करता रहता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुरेन्द्र गुप्ता ने की।मंत्री हर्ष आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया।डी ए वी सुल्तानपुरी के बच्चों ने राधा भारद्वाज के निर्देशन में संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आर्य नेता ओम सपरा, यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य,दुर्गेश आर्य,देवेन्द्र भगत, अरुण आर्य, सुरेश आर्य, नंदकिशोर गुप्ता, विजय कटारिया,माधवसिंह आर्य, आस्था आर्य, सोनिया संजू, करुणा चांदना,डॉ. रचना चावला, अतुल आर्य, सुदेश डोगरा, आनंद प्रकाश गुप्ता, व्रत पाल भगत, देवेन्द्र दहिया, डॉ. विशाल आर्य,आर पी सूरी, रवि चड्ढा, ज्योति ओबरॉय, मनोज मान, सोहन लाल मुखी, गवेन्द्र शास्त्री, अशोक जांगर आदि उपस्थित थे।

149वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस सोल्लास सम्पन्न

महर्षि दयानन्द का संदेश आम जन तक पहुंचायें —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

पाखंड अन्धविश्वास समाज के लिए चुनौती —स्वामी आर्य वेश

गाजियाबाद, 22 मार्च 2023, आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में 149वें आर्य समाज स्थापना दिवस व नव सम्वत्सर 2080 के उपलक्ष्य में शम्भू दयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम दयानन्द नगर गाजियाबाद में भव्य समारोह का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञब्रह्मा स्वामी सुर्यवेश ने यज्ञ कर किया व नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।वेदपाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया।मुख्य यज्ञमान श्रीमती शिल्पा गर्ग एवं श्री सुभाष गर्ग,श्रीमती बिमला चौधरी एवं योगेन्द्र चौधरी रहे। मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त जीवनः मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

चैत्र शुक्ल नवमी आर्यों व हिन्दुओं का ही नहीं अपितु संसारस्थ सभी विवेकशील लोगों के लिए आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म दिवस पर्व है। इस पर्व को श्री रामचन्द्र जी के भक्त अपनी अपनी तरह से सर्वत्र मनाते हैं। हम वैदिक धर्मी आर्य हैं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण किए हुए एक महान पुरुष हैं। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेदों द्वारा स्थापित सभी मर्यादाओं का पालन किया और यह सिद्ध किया कि वैदिक शिक्षायें केवल पुस्तकीय ज्ञान न होकर वह पूरी की पूरी जीवन में धारण व पालन करने योग्य है। श्री राम का जन्म दिवस पर्व चौत्र शुक्ल पक्ष की नवमी हमें यह अवसर देता है कि हम उनके जीवन के गुणों का चिन्तन व मनन करें और देखें की हममें उनकी तुलना में क्या कमियां हैं। यह मनुष्य जीवन सर्वव्यापक व सर्वज्ञ ईश्वर, जो श्री राम चन्द्र जी के भी उपास्य थे, ने हमें अन्यान्य वा सभी गुणों को धारण करने तथा असत्य व अवगुणों को छोड़ने एवं उन्हें दग्धबीज करने के लिए दिया है। जो ऐसा करते हैं वह ईश्वर के प्रिय बनते हैं और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन के ध्येय व लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। आज की आधुनिक संस्कृति खाओ, पीयो और जीओ में विश्वास रखती है। इसको मानने वाले लोग परजन्म में घोर अन्धकार को प्राप्त होकर जन्म व मृत्यु के बन्धन में पड़कर दुःखसागर में जन्म–जन्मान्तरों में अपने कर्मों का भोग करते हैं। वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त वह ज्ञान है जिससे मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति होती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम वह आदर्श मनुष्य वा महापुरुष थे जिन्होंने अपने जीवन को वेदमय बनाकर वेद की हर शिक्षा का यथावत् पालन किया था। हम यहां यह भी वर्णन कर दें कि श्री रामचन्द्र जी ईश्वर के अवतार नहीं अपितु ईश्वर के सच्चे भक्त, उपासक, आज्ञापालक, वैदिक गुणों के श्रेष्ठ आदर्श व उदाहरण तथा विश्व के सभी युवाओं व वृद्धों के सबसे बड़े रोल माडल वा आदर्श महापुरुष हैं। जो भी मनुष्य उनके जीवन को अपनायेगा वह इस संसार रूपी भवसागर में डूबेगा नहीं अपितु तैर कर पार लग सकता है। यह भी बता दें कि राम–राम के नाम का जप करने से लाभ नहीं होगा अपितु श्री रामचन्द्र जी जैसा बनने से ही हमें लाभ होगा। श्री रामचन्द्र जी का जीवन आदर्श जीवन था। आर्य विद्वान पं. भवानी प्रसाद जी ने उनके विषय में लिखा है कि 'इस समय भारत के श्रृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठा कर चल सकते हैं, तो महात्मा राम के आदर्श चरित की विद्यमानता है। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है तो सूर्य कुल–कमल–दिवाकर राम की अनुकरणीय पावनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भारताभिजनों को धर्मिक सत्यवक्ता, सत्यसन्ध, सभ्य और दृढ़व्रत होने का अभिमान है तो प्राचीन भारत के धर्म प्राण तथा गौरवसर्वस्व श्री राम के पवित्र चरित्र की विराजमानता से।' पं. भवानी दयाल जी आगे लिखते हैं 'यदि पूर्ण परिश्रम से संसार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्र की जायें तो हम को उन में से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुणराशि एकत्र न मिल सकेगी, जिस से सर्वगुणागार श्रीराम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान् रामचन्द्र का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र उपस्थित है जो अन्य महात्माओं के बचे बचाये उपलब्ध चरित्रों से सर्वश्रेष्ठ और सब से बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन सर्वमर्यादाओं का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि केवल उन के लिए रूढ़ हो गई है। जब किसी को सुराज्य का उदाहरण देना होता है तो ''रामराज्य'' का प्रयोग किया जाता है।' इसके बाद पंडित जी ने श्री रामचन्द्र जी के गुण, कर्म व स्वभाव का वर्णन करते हुए जो लिखा है वह स्मरण व कण्ठ करने योग्य है। इसके अनुरूप ही उनके सभी भक्तों व अनुयायियों का जीवन होना चाहिये। यदि ऐसा नहीं है तो हमें लगता है कि उनका रामचन्द्र जी की भक्ति करना व उन्हें अपना आदर्श मानना उपयोगी व सार्थक नहीं है।

पण्डित जी लिखते हैं 'केवल लोक मर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनाये रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्ण रूप से पालन करके प्रातःस्मरणीय श्रीरामचन्द्र ने ही दिखलाया था। 'आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।। (बाल्मीकि रामयण)।' इस श्लोक का अर्थ है कि राज्य अभिषेक के लिए बुलाये हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार मे मैंने (ऋषि बाल्मीकि ने) कुछ भी अन्तर नहीं देखा। आदिकवि वाल्मीकि का यह शब्द–चित्र निष्काम कर्मवीर श्री रामचन्द्र जी का ही यथार्थ चित्र था। वास्तव में वह स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रतनिरत, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृददुःखविमोचक मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक नरेश, सन्तानवत्सलपिता और संसार–मर्यादाव्यवथापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौसल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धक, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर महाराजाधिराज, भगवान् रामचन्द्र में ही पाया जाता है।' श्री रामचन्द्र जी के यह गुण उनके प्रत्येक भक्त में होने चाहियें। यदि ऐसा पाया जाता है सभी कोई व्यक्ति श्रीरामभक्त कहला सकता है, अन्यथा नहीं। हमें तो यह कहने में कुछ सन्देह नहीं है कि यह समस्त गुण तो क्या ऐसे कुछ थोड़े गुण भी भगवान राम के अनुयायी हम लोगों में नहीं हैं। यही हमारे धर्म व संस्कृति के प्रसार में बाधक है व हिन्दु आर्य जाति की अवनति का कारण है। श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में जन्में थे। त्रेतायुग की अवधि 12.96 लाख वर्ष और द्वापर की 8.64 लाख वर्ष होती है। इस दृष्टि से श्री रामचन्द्र जी का काल न्यूनतम 8.64 वर्ष से लेकर 21.60 लाख वर्ष के बीच होता है। इतने वर्ष पूर्व ही महर्षि बाल्मीकि जी हुए थे। वह ऋषियों के समान एक एक ऋषि और योगी थे और अपने ऋषित्व व योगबल से अतीत की बातों को प्रत्यक्ष करने की क्षमता रखते थे। संस्कृत में काव्य रचना का गुण उन्हें परमात्मा से प्राप्त हुआ था और श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर रामायण की रचना की प्रेरणा भी ईश्वर से ही मिली थी, ऐसा हमारा अनुमान है। उन दिनों देश में एक नारद मुनि होते थे जो अन्य लोकों सहित पूरी पृथिवी का भ्रमण करते रहते थे। सभी देशों के इतिहास का उन्हें ज्ञान था और प्रायः सभी विद्याओं में वह निपुण थे। एक समय ऐसा आया कि नारद जी महर्षि बाल्मीकि जी के आश्रम में पहुंच गये और दोनों के मध्य वार्तालाप हुआ। इस अवसर का लाभ उठाकर महर्षि बाल्मीकि जी ने नारद जी से प्रश्न किये। उन्होंने उनसे पूछा कि हे मुनिवर ! इस समय संसार में गुणवान्, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने व्रत में दृढ़ पुरुष कौन है? सदाचार से युक्त सब प्राणियों के कल्याण में तत्पर, विद्वान्, सामर्थ्यशाली और देखने में सब से सुन्दर पुरुष कौन है? जो तपस्वी तो हो परन्तु क्रोधी न हो। तेजस्वी तो हो परन्तु ईर्ष्यालु न हो और इन सब दया, अक्रोध आदि गुणों से युक्त होते हुए भी जब रोष आ जाये तो जिस के सामने देवजन भी कांपने लगें। हे तपेश्वर ! यदि आप किसी ऐसे महापुरुष को जानते हों तो उस का वृत्तान्त मुझ को बताइये क्योंकि आप त्रिलोक भ्रमण करने वाले हैं।' बाल्मीकि जी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए नारद जी ने कहा कि बाल्मीकि जी ! अयोध्या में इक्षवाकु वंश मे उत्पन्न हुआ राम नाम से जो प्रसिद्ध राजा राज करता है, वह उन सब गुणों से युक्त है जिनका आपने उल्लेख किया है। नादर मुनि जी ने राम का तब तक का सम्पूर्ण जीवन चरित्र भी संक्षेप में बाल्मीकि जी को सुना वा बता दिया। श्री रामचन्द्र जी सत्यवक्ता और कर्तव्यों के आदर्श पालक थे। बाल्मीकि रामायण से उनके इन व अन्य सभी गुणों पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। अतः बाल्मीकि रामायण पढ़ने व मनन करने योग्य है। कैकेयी ने जब महाराज दशरथ के वचन को सत्य सिद्ध करने के लिए राम को वन–गमन की सूचना दी तब राम ने कर्तव्य को ही सर्वोपरि स्थान दिया। जब भरत उन्हें वन से लौटाने के लिए गये और मन्त्रियों तक ने उन्हें अयोध्या लौटने की प्रेरणा की तब भी उन्होंने कर्तव्य को सर्वोपरि रखा। जब जाबाल ने उन के समक्ष पार्थिव प्रलोभन रखकर तर्क वितर्क के द्वारा उन का घर लौटना समुचित सिद्ध करने की चेष्टा की तब उन्होंने जो उत्तर दिए वे धर्म के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। उन्होंने कहा 'अपने को वीर कहलाने वाला व्यक्ति कुलीन है या अकुलीन है, पवित्र है या अपवित्र, यह उसके चरित्र से ही विदित हो सकता है। यदि मैं धर्म का ढोंग करूं परन्तु आचरण करूं धर्म के विरूद्ध तो कैसे समझदार पुरुष मेरा मान करेगें? उस दशा में मैं कुल का कलंक ही माना जाऊंगा।' आईये, अब रामचन्द्र जी की कृतज्ञता का उदाहरण भी देखते हैं। सुग्रीव और विभीषण ने राम की संकट के समय सहायता की थी। राम ने उन दोनों का संकट निवारण करके उन दोनों को ही राज्य दिलाकर उस सहायता का जो भव्य बदला दिया, वह राम की कृतज्ञता की भावना का स्पष्ट उदाहरण है। श्री रामचन्द्र जी ने अपनी सत्यवादिता से सत्य को गौरवान्वित किया था। राम चन्द्र जी सत्य के जीते जागते मूर्तरूप थे। यदि राम कुछ हैं तो वह सत्य को धारण व उसका पालन करने के कारण ही हैं। सत्य कहना और सत्य करना, ये दो राम के मुख्य गुण थे। राम के दो वाक्य ही उन के अपने चरित्र का सांगोपांग चित्रण कर देते हैं। महाराज दशरथ के समक्ष कैकेयी ने जब राम को वनवास जाने का कठोर आदेश देने मे कुछ आनाकानी की तो राम ने कहा था 'हे देवी (कैकेयी) राजा क्या चाहते हैं, यह मुझे बताइये। मैं उसे पूरा करूंगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है। राम किसी बात को दूसरी बार नहीं कहता।' रामचन्द्र जी तो इसके आगे भी कहते हैं 'न आज तक मैंने कभी झूठ बोला है और न आगे कभी बोलूंगा।' वस्तुतः सत्य और उस के पालन में दृढ़ता राम के भव्य जीवन के दो प्रधान तत्व है। श्री रामचन्द्र जी का जीवन विश्व के महापुरुषों के जीवन साहित्य में सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वोत्तम है। उनका जीवन आदर्श जीवन है जिसका अध्ययन, चिन्तन, मनन व आचरण जीवन को सार्थक करने में समर्थ है। यह भी उल्लेख कर दें कि बाल्मीकि रामायण श्रीरामचन्द्र जी की अवतार लेकर लीला करने की कहानी व काल्पनिक घटनाओं का ग्रन्थ नहीं है अपितु यह सत्य इतिहास का ग्रन्थ है। यह भी तथ्य है कि बाल्मीकि रामायण में मध्यकाल में स्वार्थी व साम्प्रदायिक लोगों ने प्रक्षेप कर इसके स्वरूप को विकृत किया है। रामचन्द्र जी के कार्यों को लीला की उपमा देकर हमारे पौराणिक भाई श्रीरामचन्द्र जी के महान् कार्यों का अवमूल्यन करते हैं। यह भी हमारे समाज के पतन का एक कारण है। यदि हम रामचन्द्र जी को सृष्टिकर्ता ईश्वर का अवतार न मानकर अपना आदर्श एवं महान पुरूष मानेंगे तो हम उनके जैसा बनने का प्रयत्न करेंगे। ऐसा करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। रामचन्द्र जी की जयन्ती 'रामनवमी' के पवित्र पर्व के अवसर पर हमारा कर्तव्य है कि हम इसे शिक्षाप्रद रूप से श्रद्धापूर्वक मनायें जिससे सर्वसाधारण का पथप्रदर्शन हो। आज के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन वा स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा को प्रचारित करना चाहिये। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिए और अपने पूर्व पुरुषों के पदचिन्हों पर चलते हुए धर्म के तीनों स्कन्ध यज्ञ, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही इस व ऐसे अन्य शुभ दिनों को बिताना चाहिये। ऐसा करके ही हम अपनी उन्नति करते हुए दूसरों के उद्धार के आधार बन सकेंगे।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

आओ तपोवन देहरादून

आप सभी को जानकर हर्ष होगा कि **वैदिक तपोवन आश्रम देहरादून** का ग्रीष्मकालीन उत्सव दिनांक 10 मई से 14 मई 2023 तक आयोजित किया जा रहा है। दिल्ली से **समापन समारोह व यज्ञ पूर्णाहुति** में **रविवार 14 मई 2023** को प्रातः 7 से दोपहर 1.00 बजे तक सम्मिलित होने हेतु दो बसों की व्यवस्था की है। दिल्ली से बस **शुक्रवार 12 मई रात्री 10 बजे** चलेगी और **शनिवार 13 मई को प्रातः काल हरिद्वार पहुचेंगी,** हरिद्वार स्नान भ्रमण के पश्चात दोपहर देहरादून प्रस्थान करेगी। शनिवार रात्री आश्रम पहुंच कर भजन संध्या फिर **रविवार 14 मई दोपहर 2 बजे दिल्ली वापिस प्रस्थान करेगी।**

साधारण बस की प्रति सीट किराया 800/– रू रहेगा

मार्ग में जलपान भोजन सभी स्वयं करेगे।

सीट बुकिंग हेतुः–प्रवीण आर्य –9911404423,
अरुण आर्य–9818530543, **सोनिया संजू**–9643875121,
अनिल आर्य, 98680 51444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 522वां वेबिनार सम्पन्न

'श्री राम मानव से महा मानव तक' गोष्ठी सम्पन्न

श्री राम ने जीवन में लिए व्रतों का पालन किया – आचार्य हरिओम शास्त्री

सोमवार 27 मार्च 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'श्री राम मानव से महा मानव तक' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया ।यह करोना काल से 521 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि श्री राम ने जो व्रत संकल्प लिए उनका पूर्णतः पालन किया। श्रीराम चन्द्र जी महाराज मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम बन गए। क्योंकि उनका अपना जीवन अपने सुख और समृद्धि के लिए नहीं बल्कि प्राणिमात्र के लिए था। वे एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श पिता, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र थे। वे केवल आदर्श मित्र ही नहीं बल्कि एक आदर्श शत्रु भी थे। आदर्श मानव हेतु जो भी गुण, कर्म और स्वभाव आवश्यक होते हैं वे सभी राजकुमार श्री राम में दिखाई देते हैं। महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में कहा है कि – 'शैशवेऽभ्यस्त विद्यानां,यौवने विषयैषिणाम्'।' 'वार्धक्ये मुनिवृत्तानां,योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।' अर्थात् रघुवंशी राजाओं का जीवन बचपन में विद्याओं का अभ्यास करने,यौवन में विषयों का भोग करने, बुढ़ापे में ऋषि मुनियों का सा जीवन बिताने और अन्त में योग द्वारा शरीर छोड़ने तक होता था। श्री रामचन्द्र जी ने जीवन में 'निशिचर हीन करहुं मही' का व्रत लेकर धरती पर मानवता का आजीवन प्रचार किया। जीवन में लिए गए व्रत का पालन हर कीमत और हर परिस्थिति में किया। फिर चाहे उन्हें कितनी कठिन से कठिन समस्या का सामना करना पड़ा हो। मित्रों सुग्रीव और विभीषण को दिए गए वचन को अन्त तक निभाया। सोने की सुन्दर लंका को भी जीत कर उन्हें माता और मातृ भूमि स्वर्ग से बढ़कर लगती हैं। इसलिए माता और मातृभूमि के दर्शन करने और आदर्श भाई भरत को दिए गए वचन का पालन करने हेतु वे लक्ष्मण से कहते हैं – 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे' 'लक्ष्मण रोचते।' 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ''।।' हे लक्ष्मण! मुझे यह सोने की लंका भी नहीं अच्छी लगती है क्योंकि मेरे लिए तो मां और मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक महान हैं। इसलिए मैं शीघ्रातिशीघ्र इनके दर्शन करना चाहता हूं।। इसलिए 'मर्यादा पुरुषोत्तम' पद किसी भी अन्य महापुरुष के साथ न लगकर केवल 'श्री राम जी' के साथ लगकर अपनी शोभा बढ़ा रहा है। हमें अपने अपने घर के छोटे बड़े सभी सदस्यों को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम चन्द्र जी का जीवन परिचय देते रहना चाहिए तभी हमारा श्री रामनवमी उत्सव मनाना सार्थक होगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन करते हुए कहा कि श्री राम भारत के कण कण में विद्यमान है उनके गुणों के जीवन में धारण करने से एक आदर्श राज्य की स्थापना होगी। मुख्य अतिथि आर्य नेता राजेश मेहन्दीरता व विमल सचदेवा ने शी राम जी जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, कमला हंस, संतोष धर, ईश्वर देवी, कमलेश चांदना,उर्मिला आर्य, सुनीता बहल,रेखा गौतम आदि के मधुर भजन हुए।

अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान दिवस पर ऑनलाइन गोष्ठी सम्पन्न

शहीदों का बलिदान सदेव मार्ग प्रशस्त करता रहेगा –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार 23 मार्च 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान दिवस पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि अमर शहीदों का बलिदान सदियों तक समाज का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर हज़ारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। आज शहीदों के बलिदान को नयी पीढ़ी को बतलाने की आवश्कता है।यह आजादी क्रांतिकारियों के बलिदान से ही मिली है इसकी रक्षा व अखण्डता का सबको संकल्प लेना होगा। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि देश को अर्पित किया जिन वीरों ने तन मन धन,उन शहीदों के लिए शत नमन शत शत नमन कर दी श्रद्धांजलि। गायिका पिंकी आर्य, प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, सुदेश आर्य, अंजू खरबंदा, कमलेश चांदना, कृष्णा पाहुजा आदि के मधुर भजन हुए।

'मृत्यु एक शाश्वत सत्य' पर गोष्ठी सम्पन्न

मृत्यु जर्जर मकान से नए मकान में प्रवेश का नाम है –साध्वी रमा चावला

शुक्रवार 24 मार्च 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'मृत्यु एक शाश्वत सत्य' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह करोना काल से 520 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी साध्वी रमा चावला ने कहा कि मृत्यु परमात्मा का अटल नियम है।सत्य तो यह है की मृत्यु से जीवन का सूत्र टूटता नहीं है,केवल रूप बदलता है।मृत्यु अनेक दुखों से छूट जाने का मार्ग है।शमशान भूमि हमें जीवन का मूल्य बताती है और परमात्मा जीवात्मा की याद दिलाती है। मृत्यु को गुरु माना गया है मृत्यु के भय से भगवान के प्रति प्रीति बढ़ती है मृत्यु के समय से स्मरण से मनुष्य परमात्मा के निकट आता है।मृत्यु का चिंतन मानव को पाप अपराध अधर्म और बुराइयों आदि से बचाकर सन्मार्ग तथा प्रभु भक्ति की ओर ले जाता है।मृत्यु की उपमा पुराने मकान जर्जर कपड़े तथा सांप की केंचुली से दी गई है।अच्छी मृत्यु फसल के समान मानी गई है जब फसल पक जाती है तो काट ली जाती है पूर्ण आयु भोगने के बाद मृत्यु सुखद मानी जाती है जैसे अगरबत्ती जल जाती है परंतु पीछे सुगंध छोड़ जाती है ऐसे ही मनुष्य मृत्यु के बाद अपने कर्मों की सुगंध संसार में छोड़ जाते हैं उन्हीं का जन्म और उन्हीं की मृत्यु सार्थक कहलाती है अतः परमात्मा को मृत्यु से पूर्व रक्षक बना लें फिर मृत्यु भयभीत नहीं करेगी।संसार चली चला का मेला है यहां सब बिछड़ते बारी–बारी से हैं ना जाने कब जाना पड़े अतरू बढ़ती हुई उम्र के साथ साथ मृत्यु की सोच और तैयारी करनी चाहिए। मुख्य अतिथि रजनी गर्ग व अध्यक्ष राज सरदाना ने मृत्यु को वरदान की संज्ञा दी।केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन किया एवं धन्यवाद ज्ञापन किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने 45 वर्षीय मौसेरे भाई स्व. गगन खुराना के निधन पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए और परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की। गायिका पिंकी आर्या, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, कुसुम भण्डारी, कृष्णा पाहुजा, कमला हंस,अनिता रेलन, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा आदि के मधुर भजन हुए।

अथर्ववेद के प्रथम सूक्त वाचस्पति पर गोष्ठी सम्पन्न

वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सोच व कर्म की आवश्कता –अतुल सहगल

सोमवार 20 मार्च 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में अथर्ववेद के प्रथम सूक्त वाचस्पति पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 520 वाँ वेबिनार था। वैदिक विद्वान अतुल सहगल ने अथर्ववेद में विज्ञान की चर्चा की और यह कहा कि विज्ञान हर वस्तु और क्रिया का व्यवस्थित ज्ञान है, पूर्ण ज्ञान है और शुद्ध ज्ञान है और इस विज्ञान के स्रोत वेद ही हैं। मानव जीवन को श्रेष्ठ ढंग से जीने के लिए वैज्ञानिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विज्ञान सम्मत कर्म करने की आवश्यकता है।यह मन्त्र विज्ञान प्रधान ग्रन्थ अथर्ववेद की खिड़की के समान उस ग्रन्थ के मुख्य विषय की झलक देता है। मन्त्र का भावार्थ प्रस्तुत करते हुए मानव शरीर के 21 जड़ तत्वों की विवेचना की और कहा कि इस मन्त्र में अनेक प्रार्थनायें समाहित हैं।वे सब ईश्वर से इन 21 तत्वों का ज्ञान व बल की कामना करती हैं।यदि हमारी इन्द्रियां पूर्ण बल से कार्य करेंगी व ज्ञान के आधार पर ठीक दिशा में कार्यरत्त होंगी तो हमारी उन्नति होगी।यह तभी होगा जब मन और बुद्धि सही प्रकार से कार्य करें व मन पर बुद्धि की पूरी पकड़ हो और बुद्धि सत्यज्ञान को ग्रहण करती हुई अपना कार्य करे।ऐसा होने से हम अपने दैनिक जीवन में पापकर्म से बचे रहेंगे।हम परोपकार व प्राणी हित की भावना से भरे रहेंगे व अपनी शक्ति, बल और सामर्थ्य का पूरा उपयोग करते हुए पूरा दिन पुण्य, पुनीत और सृजनात्मक कर्म करेंगे। वक्ता ने अन्तःकरण के सूक्ष्म तत्वों –– मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की चर्चा की और बताया कि किस प्रकार सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया में यह उत्पन्न हुए।प्रकृति के तीन गुणों की भी यथोचित विवेचना की और समझाया कि किस प्रकार इनके सही सम्मिश्रण से जीवन व्यवस्थित और सुचारु रूप से चलता है व मनुष्य उन्नति करता है। इस मन्त्र का वैज्ञानिक, अध्यात्मिक और व्यवहारिक रूप प्रस्तुत किया।इन तथ्यों की जानकारी के बाद मनुष्य इस महत्वपूर्ण मंत्र की शक्ति से परिचित हो,इससे लाभ उठाना प्रारम्भ कर देता है।अथर्ववेद विज्ञान का वेद है।यह ग्रन्थ पदार्थ और अध्यात्म विज्ञान का ग्रन्थ है और इसका यह मन्त्र विज्ञान द्वारा शारीरिक और आत्मिक उन्नति की प्रार्थना करता है।इस मन्त्र द्वारा प्रार्थना कर्त्ता मनुष्य को दयालु व कल्याणकारी ईश्वर उचित फल दे के उसका उद्धार करता है। मुख्य अतिथि विद्या सागर वर्मा (पूर्व राजदूत कजाखस्तान) व अध्यक्ष डॉ. सुषमा आर्य ने भी विषय की संपुष्टि की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, जनक अरोड़ा, कृष्णा पाहुजा, कुसुम भंडारी आदि के भजन हुए।

आर्य समाज सोहन गंज व पूर्वी पंजाबी बाग का उत्सव सम्पन्न

संस्कारित चरित्रवान युवा राष्ट्र बचायेगे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 26 मार्च 2023, आर्य समाज सोहन गंज, घंटाघर , दिल्ली में नव संवत्सर यज्ञ व आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। यज्ञ आचार्य राघवेन्द्र शास्त्री ने करवाया। मुख्य अतिथि अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) ने कहा कि राष्ट्र चरित्रवान व संस्कारित युवाओ से बनता है आर्य जनों को नव वर्ष पर युवा निर्माण का संकल्प लेना चाहिए तभी राष्ट्र का भविष्य उज्जवल हो सकता है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज वैचारिक आंदोलन है जो लोगों की सोचने की दिशा व दशा बदलता है। यह नववर्ष पूरे विश्व का है क्योंकि इसी दिन सृष्टि का आरम्भ हुआ था। वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश भारती ने यज्ञ व अग्नि के महत्व पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि अग्नि को पवित्र माना गया है और प्रत्येक शुभ कार्य अग्नि प्रज्वलित करके ही किया जाता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन ओम सपरा प्रधान उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल ने किया। प्रधान नेत्र पाल आर्य ने आभार व्यक्त किया।

द्वितीय चित्र में आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग दिल्ली के ढींगरा पार्क में आयोजित समारोह में युवा कार्यकर्ता अखिल तनेजा का अभिनंदन करते अनिल आर्य, विधायक शिव प्रसाद गोयल, प्रधान रवि चड्ढा, राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, क्रान्ति तनेजा आदि।

(पृष्ठ 1 का शेष)

संदेश घर घर पहुचाने की आवश्कता है तभी एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है।उन्होंने कहा कि जब तक युवा पीढ़ी संस्कारित नहीं होगी तब तक आर्य समाज का मिशन अधूरा रहेगा क्योंकि युवा ही समाज की रीड है।हमें अपनी संस्कृति व पर्वों पर गर्व करना चाहिए और अन्यों को प्रेरित करना चाहिए।राष्ट्र आज विषम परिस्थितियों से निकल रहा है देश–भक्ति का ज़ज्बा सब में जागृत करने का काम आर्य समाज को करना है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश जी ने कहा कि किसी समाज के लिए बढ़ता पाखंड अन्धविश्वास चुनौती है जिसे सबने मिलकर दूर करना है,आज पढ़ा लिखा व्यक्ति भी बहकावे में आ जाता है।टीवी चौनल के विज्ञापन भी कई बार भ्रमित करते हैं जिससे सावधान रहने की आवश्यकता है।उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द महान क्रांतिकारी थे उनके स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को सदेव याद रखा जायेगा। अंबाला से पधारी सुप्रसिद्ध पण्डिता श्वेता आर्या के मधुर भजनो का सभी ने आनंद लिया। समारोह की अध्यक्षता अध्यक्षता स्वामी सूर्य देव जी ने की और सन्यास आश्रम की शोभा बढ़ाने पर अधिकारियों का अभार व्यक्त किया है। कार्यक्रम का कुशल संचालन यशस्वी प्रधान सत्य वीर चौधरी ने किया। आर्य नेता श्रद्धानंद शर्मा,माया प्रकाश त्यागी,ओम प्रकाश आर्य, डॉ.आर के आर्य,प्रवीण आर्य (प्रान्तीय महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद),जितेंद्र आर्य,कृष्ण कुमार यादव, तेजपाल आर्य, गौरवसिंह आर्य,ओम सपरा, रामकुमार आर्य, सुभाष शर्मा,वेद व्यास, चौधरी मंगल सिंह, देवेन्द्र मेहता, प्रद्योत पाराशर,त्रिलोक शास्त्री, सुभाष गर्ग,सत्यकेतु एडवोकेट, ज्ञानेन्द्र सिंह,सत्य पाल आर्य,डा प्रतिभा सिंघल,आशा आर्या आदि उपस्थित थे। सभा मंत्री नरेंद्र पांचाल ने दूर दराज से पधारे श्रोताओं आर्य प्रतिनिधियों समारोह में पधारने पर आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ, ऋषिलंगर के साथ समारोह संपन्न हुआ।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970